प्रशिक्षण कार्यक्रम

चन्दन की व्यावसायिक खेती

भारतीय कृषि और वानिकी क्षेत्र में चन्दन की खेती को लेकर बढ़ते रुझान को ध्यान में रखते हुए भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा वन विज्ञान केन्द्र के अन्तर्गत दिनांक 25.09.2025 को चन्दन की व्यावसायिक खेती विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभागी किसानों को चन्दन की खेती के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी गयी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकार की तरफ से गैर परम्परागत क्षेत्रों जैसे उत्तर प्रदेश में चन्दन की खेती को बढ़ावा देने की व्यापक योजना बनायी गयी है, जिसमें किसानों के लिए चन्दन उगाने और बिक्री को सुलभ कराने के प्रयास चल रहे हैं। केन्द्र के आरम्भिक अनुसंधान ने उत्तर प्रदेश को चन्दन की खेती के लिए उपयुक्त पाया है। इसी क्रम में उन्होने कहा कि चन्दन की खेती से एक स्थिर आय का स्रोत मिलता है और यह पर्यावरण को भी लाभ पहुँचाता है। विषय विशेषज्ञ डॉ. दीपक गोंड, सहायक प्राध्यापक, सी.एम.पी. महाविद्यालय, प्रयागराज ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि चन्दन, जो कि अपने सुगंधित तेल और औषधीय गुणों के लिए प्रसिद्ध है, अब व्यावसायिक खेती के रूप में एक लाभकारी विकल्प बन गया है। साथ ही, इसके उपयोग से न केवल आर्थिक लाभ होता है, बल्कि पर्यावरण की दृष्टि से भी यह फसल अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उत्कृष्ट पाण्डेय, प्रगतिशील कृषक ने उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में उनके द्वारा चन्दन की नर्सरी तथा रोपण सम्बन्धी अनुभव साझा किए। डॉ. दिनेश गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, बांदा कृषि विश्वविद्यालय ने पौधारोपण विधियों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. अवनीश शर्मा, सहायक प्राध्यापक, बांदा कृषि विश्वविद्यालय, बांदा ने वैज्ञानिक खेती और प्रबन्धन पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने पौधशाला निर्माण एवं प्रबन्धन विषय पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने चन्दन के रख–रखाव एवं आर्थिकी पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अनुभा श्रीवास्तव ने चन्दन आधारित कृषिवानिकी पर समावेश पर विस्तृत चर्चा किया। कार्यक्रम में चन्दन की उन्नत खेती, पौधों की देखभाल, जलवायु की उपयुक्तता और मृदा की विशेषताओं पर विस्तृत चर्चा किया गया। केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्देश्य उत्तर प्रदेश में चन्दन की खेती को बढ़ावा देना और किसानों को इससे जुड़ी आधुनिक जानकारी उपलब्ध कराना, कृषि आय को बढ़ा सकें और पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान दे सकें। इस कार्यक्रम में 100 से अधिक किसानों ने भाग लिया, जिन्होने चन्दन की व्यावसायिक खेती के अवसरों और तकनीकी पहलुओं पर जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर उपस्थित विशेषज्ञों द्वारा चन्दन की खेती के समग्र दृष्टिकोण को समझाया गया, साथ ही खेती में आने वाली चुनौतियों और उनके समाधान पर भी कृषक–वैज्ञानिक संवाद द्वारा चर्चा किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम
चन्दन की व्यावसायिक खेती
25 सितम्बर 2025

प्रशिक्षण कार्यक्रम
25 सितम्बर 2025

चंदन की खेती

प्रशिक्षण कार्यक्रम
25 सितम्बर 2025

प्रशिक्षण कार्यक्रम
25 सितम्बर 2025

संजय सिंह

सरकार ने चन्दन की खेती को बढ़ावा देने की व्यापक योजना बनाई : डा. संजय सिंह

25 Sep 2025 17:23:31

-चन्दन की व्यावसायिक खेती पर किसानों को दी गई जानकारी
प्रयागराज, 25 सितम्बर (हि.स.)। भारतीय कृषि और वानिकी क्षेत्र में चन्दन की खेती को लेकर बढ़ते रुझान को ध्यान में रखते हुए भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा वन विज्ञान केन्द्र के अंतर्गत गुरूवार को चन्दन की व्यावसायिक खेती पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रतिभागी किसानों को चन्दन की खेती के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने किसानों को सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकार की तरफ से गैर परंपरागत क्षेत्रों जैसे उत्तर प्रदेश में चन्दन की खेती को बढ़ावा देने की व्यापक योजना बनाई गई है। जिसमें किसानों के लिए चन्दन उगाने और बिक्री को सुलभ कराने के प्रयास चल रहे हैं। केन्द्र के आरम्भिक अनुसन्धान ने उत्तर प्रदेश को चन्दन की खेती के लिए उपयुक्त पाया है। उन्होंने कहा कि चन्दन की खेती से एक स्थिर आय का स्रोत मिलता है और यह पर्यावरण को भी लाभ पहुंचाता है। विषय विशेषज्ञ डॉ. दीपक गोंड, सहायक प्राध्यापक, सी.एम.पी. महाविद्यालय ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि चन्दन, जो कि अपने सुगंधित तेल और औषधीय गुणों के लिए प्रसिद्ध है, अब व्यावसायिक खेती के रूप में एक लाभकारी विकल्प बन गया है। साथ ही, इसके उपयोग से न केवल आर्थिक लाभ होता है, बल्कि पर्यावरण की दृष्टि से भी यह फसल अत्यधिक महत्वपूर्ण है। प्रगतिशील कृषक उत्कृष्ट पाण्डेय ने उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में उनके द्वारा चन्दन की नर्सरी तथा रोपण सम्बन्धी अनुभव साझा किए। डॉ. दिनेश गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, बाँदा कृषि विश्वविद्यालय ने पौधरोपण विधियों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. अवनीश शर्मा, सहायक प्राध्यापक, बाँदा कृषि विश्वविद्यालय ने वैज्ञानिक खेती और प्रबंधन पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने पौधशाला निर्माण एवं प्रबंधन पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आलोक यादव ने चन्दन के रख-रखाव एवं आर्थिकी पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने चन्दन आधारित कृषिवानिकी पर समावेश पर चर्चा की। कार्यक्रम में चन्दन की उन्नत खेती, पौधों की देखभाल, जलवायु की उपयुक्तता और मृदा की विशेषताओं पर विस्तृत चर्चा की गई।

मीडिया प्रभारी अंकुर श्रीवास्तव ने बताया कि केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्देश्य प्रदेश में चन्दन की खेती को बढ़ावा देने और किसानों को इससे जुड़ी आधुनिक जानकारी उपलब्ध कराने, कृषि आय बढ़ाने और पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान देना रहा। कार्यक्रम में सौ से अधिक किसानों ने भाग लिया, जिन्होंने चन्दन की व्यावसायिक खेती के अवसरों और तकनीकी पहलुओं पर जानकारी प्राप्त की।

हिन्दुस्थान समाचार / विद्याकांत मिश्र

चन्दन की व्यावसायिक खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

दैनिक अयोध्या टाइम्स प्रयागराज ब्यूरो बृजेश केसरवानी।

प्रयागराज। भारतीय कृषि और वानिकी क्षेत्र में चन्दन की खेती को लेकर बढ़ते रुझान को ध्यान में रखते हुए भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा वन विज्ञान केन्द्र के अंतर्गत दिनांक 25.09.2025 को चन्दन की व्यावसायिक खेती विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभागी किसानों को चन्दन की खेती के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकार की तरफ से गैर परंपरागत क्षेत्रों जैसे उत्तर प्रदेश में चन्दन की खेती को बढ़ावा देने की व्यापक योजना बनाई गई है, जिसमें किसानों के लिए चन्दन उगाने और बिक्री को सुलभ कराने के प्रयास चल रहे हैं। केन्द्र के आरंभिक अनुसन्धान ने उत्तर प्रदेश को चन्दन की खेती के लिए उपयुक्त पाया है। इसी क्रम में उन्होंने कहा कि चन्दन की खेती से एक स्थिर आय का स्रोत मिलता है और यह पर्यावरण को भी लाभ पहुँचाता है। विषय विशेषज्ञ डॉ. दीपक गोंड, सहायक प्राध्यापक, सी.एम.पी. महाविद्यालय, प्रयागराज ने व्याख्यान प्रस्तुत करते

हुए कहा कि चन्दन, जो कि अपने सुगंधित तेल और औषधीय गुणों के लिए प्रसिद्ध है, अब व्यावसायिक खेती के रूप में एक लाभकारी विकल्प बन गया है। साथ ही, इसके उपयोग से न केवल आर्थिक लाभ होता है, बल्कि पर्यावरण की दृष्टि से भी यह फसल अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उत्कृष्ट पाण्डेय, प्रगतिशील कृषक ने उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में उनके द्वारा चन्दन की नर्सरी तथा रोपण सम्बन्धी अनुभव साझा किए गए। डॉ. दिनेश गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, बाँदा कृषि विश्वविद्यालय ने पौधरोपण विधियों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. अवनीश शर्मा, सहायक प्राध्यापक, बाँदा कृषि विश्वविद्यालय, बाँदा ने वैज्ञानिक खेती और प्रबंधन पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने पौधशाला निर्माण एवं प्रबंधन पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आलोक यादव ने चन्दन के रख–रखाव एवं आर्थिकी पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने चन्दन आधारित कृषिवानिकी पर समावेश पर विस्तृत चर्चा किया। कार्यक्रम में चन्दन की उन्नत खेती, पौधों की देखभाल, जलवायु की उपयुक्तता और मृदा की विशेषताओं पर विस्तृत चर्चा किया गया। केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्देश्य उत्तर प्रदेश में चन्दन की खेती को बढ़ावा देना और किसानों को इससे जुड़ी आधुनिक जानकारी उपलब्ध कराना, कृषि आय को बढ़ा सकें और पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान दे सकें। इस कार्यक्रम में 100 से अधिक किसानों ने भाग लिया, जिन्होंने चन्दन की व्यावसायिक खेती के अवसरों और तकनीकी पहलुओं पर जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर उपस्थित विशेषज्ञों द्वारा चन्दन की खेती के समग्र दृष्टिकोण को समझाया गया, साथ ही खेती में आने वाली चुनौतियों और उनके समाधान पर भी कृषक – वैज्ञानिक संवाद द्वारा चर्चा किया गया।

चन्दन की व्यावसायिक खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

आदर्श सत्यांकित ख़बरें

भारतीय कृषि और वानिकी क्षेत्र में चन्दन की खेती को लेकर बढ़ते रुझान को ध्यान में रखते हुए भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा वन विज्ञान केन्द्र के अंतर्गत दिनांक 25.09.2025 को चन्दन की व्यावसायिक खेती विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभागी किसानों को चन्दन की खेती के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकार की तरफ से गैर परंपरागत क्षेत्रों जैसे उत्तर प्रदेश में चन्दन की खेती को बढ़ावा देने की व्यापक योजना बनाई गई है, जिसमें किसानों के लिए चन्दन उगाने और बिक्री को सुलभ कराने के प्रयास चल रहे हैं। केन्द्र के आरंभिक अनुसन्धान ने उत्तर प्रदेश को चन्दन की खेती के लिए उपयुक्त पाया है। इसी क्रम में उन्होंने कहा कि चन्दन की खेती से एक स्थिर आय का स्रोत मिलता है और यह पर्यावरण को भी लाभ पहुंचाता है। विषय विशेषज्ञ डॉ. दीपक गोंड, सहायक प्राध्यापक, सी.एम.पी. महाविद्यालय, प्रयागराज ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि चन्दन, जो कि अपने सुगंधित तेल और औषधीय गुणों के लिए प्रसिद्ध है, अब व्यावसायिक खेती के रूप में एक लाभकारी विकल्प बन गया है। साथ ही, इसके उपयोग से न केवल आर्थिक लाभ होता है, बल्कि पर्यावरण की दृष्टि से भी यह फसल अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उत्कृष्ट पाण्डेय, प्रगतिशील कृषक ने उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में उनके द्वारा चन्दन की नर्सरी तथा रोपण सम्बन्धी अनुभव साझा किए गए। डॉ. दिनेश गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, बाँदा कृषि विश्वविद्यालय ने पौधरोपण विधियों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. अवनीश शर्मा, सहायक प्राध्यापक, बाँदा कृषि विश्वविद्यालय, बाँदा ने वैज्ञानिक खेती और प्रबंधन पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने पौधशाला निर्माण एवं प्रबंधन पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आलोक यादव ने चन्दन के रख-रखाव एवं आर्थिकी पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने चन्दन आधारित कृषिवानिकी पर समावेश पर विस्तृत चर्चा किया। कार्यक्रम में चन्दन की उन्नत खेती, पौधों की देखभाल, जलवायु की उपयुक्तता और मृदा की विशेषताओं पर विस्तृत चर्चा किया गया। केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्देश्य उत्तर प्रदेश में चन्दन की खेती को बढ़ावा देना और किसानों को इससे जुड़ी आधुनिक जानकारी उपलब्ध कराना, कृषि आय को बढ़ा सकें और पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान दे सकें। इस कार्यक्रम में 100 से अधिक किसानों ने भाग लिया, जिन्होंने चन्दन की व्यावसायिक खेती के अवसरों और तकनीकी पहलुओं पर जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर उपस्थित विशेषज्ञों द्वारा चन्दन की खेती के समग्र दृष्टिकोण को समझाया गया, साथ ही खेती में आने वाली चुनौतियों और उनके समाधान पर भी कृषक - वैज्ञानिक संवाद द्वारा चर्चा किया गया।

चंदन की व्यावसायिक खेती लाभकारी

प्रयागराज। पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र एवं वन विज्ञान केंद्र, प्रयागराज की ओर से चंदन की व्यावसायिक खेती पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन हुआ। भारतीय कृषि और वानिकी क्षेत्र में चंदन की खेती को लेकर बढ़ते रुझान को देखते हुए किसानों को चंदन की खेती के बारे में जानकारी दी गई।

चंदन की व्यावसायिक खेती पर आयोजित प्रशिक्षण का उद्घाटन करते अतिथि।

केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने बताया कि गैर-परंपरागत क्षेत्रों जैसे उत्तर प्रदेश में चंदन की खेती को बढ़ावा देने की व्यापक योजना बनाई गई है। इसमें किसानों के लिए चंदन उगाने और बिक्री को सुलभ कराने के प्रयास चल रहे हैं। केंद्र के आरंभिक अनुसंधान ने प्रदेश में चंदन की खेती को उपयुक्त पाया है। इससे एक स्थिर आय का स्रोत मिलता है और यह पर्यावरण को भी लाभ पहुँचाता है। विशेषज्ञ डॉ. दीपक गौड़ ने कहा कि चंदन सुगंधित तेल और औषधीय गुणों से भरपूर होता है, इसलिए व्यावसायिक खेती के रूप में यह एक लाभकारी विकल्प है। इस मौके पर डॉ. दिनेश गुप्ता, डॉ. अवनीश शर्मा, डॉ. अनीता तोमर, डॉ. आलोक यादव, उत्कृष्ट पांडेय समेत कई लोग मौजूद रहे।

एक स्थिर आय का स्रोत है चंदन की खेती

जासं, प्रयागराज : - पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र की ओर से सिविल लाइंस स्थित होटल युगांतर में एक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इसमें तमाम किसानों ने हिस्सा लिया। उन्हें चंदन की खेती के बारे में जानकारी दी गई। केंद्र के प्रमुख डा. संजय सिंह ने कहा कि यूपी की जलवायु चंदन की खेती के लिए अनुकूल है। इसकी खेती एक स्थिर आय का स्रोत है। सीएमपी डिग्री कालेज के विषय विशेषज्ञ डा. दीपक गोंड ने इसके गुणों की खूबियां बताई। प्रतापगढ़ में चंदन की खेती करने वाले किसान उत्कृष्ट पांडेय ने अपने अनुभव साझा किए।

चन्दन की व्यावसायिक खेती पर प्रशिक्षण आयोजित

संगम शपथ संवाददाता

प्रयागराज। भारतीय कृषि और वानिकी क्षेत्र में चन्दन की खेती को लेकर बढ़ते रुझान को ध्यान में रखते हुए भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा वन विज्ञान केन्द्र के अंतर्गत दिनांक 25.09.2025 को चन्दन की व्यावसायिक खेती विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभागी किसानों को चन्दन की खेती के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकार की तरफ से गैर परंपरागत क्षेत्रों जैसे उत्तर प्रदेश में चन्दन की खेती को बढ़ावा देने की व्यापक योजना बनाई गई है, जिसमें किसानों के लिए चन्दन उगाने और बिक्री को सुलभ कराने के प्रयास चल रहे हैं। केन्द्र के आरंभिक अनुसन्धान ने उत्तर प्रदेश को चन्दन की खेती के लिए उपयुक्त पाया है। इसी क्रम में उन्होंने कहा कि चन्दन की खेती से एक स्थिर आय का स्रोत मिलता है और यह पर्यावरण को भी लाभ पहुँचाता है। विषय विशेषज्ञ डॉ. दीपक गोंड, सहायक

प्राध्यापक, सी.एम.पी. महाविद्यालय, प्रयागराज ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि चन्दन, जो कि अपने सुगंधित तेल और औषधीय गुणों के लिए प्रसिद्ध है, अब व्यावसायिक खेती के रूप में एक लाभकारी विकल्प बन गया है। साथ ही, इसके उपयोग से न केवल आर्थिक लाभ होता है, बल्कि पर्यावरण की दृष्टि से भी यह फसल अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उत्कृष्ट पाण्डेय, प्रगतिशील कृषक ने उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में उनके द्वारा चन्दन की नर्सरी तथा रोपण सम्बन्धी अनुभव साझा किए गए। डॉ. दिनेश गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, बाँदा कृषि विश्वविद्यालय ने पौधरोपण विधियों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. अवनीश शर्मा, सहायक प्राध्यापक, बाँदा कृषि विश्वविद्यालय, बाँदा ने वैज्ञानिक खेती और प्रबंधन पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने पौधशाला निर्माण एवं प्रबंधन पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आलोक यादव ने चन्दन के रख-रखाव एवं आर्थिकी पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने चन्दन आधारित कृषिवानिकी पर समावेश पर विस्तृत चर्चा किया। कार्यक्रम में चन्दन की उनन्त खेती, पौधों की देखभाल, जलवायु की उपयुक्तता और मृदा की विशेषताओं पर विस्तृत चर्चा किया गया। केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्देश्य उत्तर प्रदेश में चन्दन की खेती को बढ़ावा देना और किसानों को इससे जुड़ी आधुनिक जानकारी उपलब्ध कराना, कृषि आय को बढ़ा सकें और पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान दे सकें। इस कार्यक्रम में 100 से अधिक किसानों ने भाग लिया।

सरकार ने चन्दन की खेती को बढ़ावा देने की व्यापक योजना बनाई : डॉ संजय सिंह

➔ **चन्दन की व्यावसायिक खेती पर किसानों को दी गई जानकारी**

सहजसत्ता संवाददाता

प्रयागराज, । भारतीय कृषि और वानिकी क्षेत्र में चन्दन की खेती को लेकर बढ़ते रुझान को ध्यान में रखते हुए भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा वन विज्ञान केन्द्र के अंतर्गत गुरूवार को चन्दन की व्यावसायिक खेती पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रतिभागी किसानों को चन्दन की खेती के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने किसानों को सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकार की तरफ से गैर परंपरागत क्षेत्रों जैसे उत्तर प्रदेश में चन्दन की खेती को बढ़ावा देने की व्यापक योजना बनाई गई है। जिसमें किसानों के लिए चन्दन उगाने और बिक्री को सुलभ कराने के प्रयास चल रहे हैं। केन्द्र के आरम्भिक अनुसन्धान ने उत्तर प्रदेश को चन्दन की खेती के लिए उपयुक्त पाया है। उन्होंने कहा कि चन्दन की खेती से एक स्थिर आय का स्रोत मिलता है और यह पर्यावरण को भी लाभ पहुंचाता है। विषय विशेषज्ञ डॉ. दीपक गोंड, सहायक प्राध्यापक, सी.एम.पी. महाविद्यालय ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि चन्दन, जो कि अपने सुगंधित

तेल और औषधीय गुणों के लिए प्रसिद्ध है, अब व्यावसायिक खेती के रूप में एक लाभकारी विकल्प बन गया है। साथ ही, इसके उपयोग से न केवल आर्थिक लाभ होता है, बल्कि पर्यावरण की दृष्टि से भी यह फसल अत्यधिक महत्वपूर्ण है। प्रगतिशील कृषक उत्कृष्ट पाण्डेय ने उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में उनके द्वारा चन्दन की नर्सरी तथा रोपण सम्बन्धी अनुभव साझा किए। डॉ. दिनेश गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, बाँदा कृषि विश्वविद्यालय ने पौधरोपण विधियों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. अवनीश शर्मा, सहायक प्राध्यापक, बाँदा कृषि विश्वविद्यालय, बाँदा ने वैज्ञानिक खेती और प्रबंधन पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने पौधशाला निर्माण एवं प्रबंधन पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आलोक यादव ने चन्दन के रख-रखाव एवं आर्थिकी पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने चन्दन आधारित कृषिवानिकी पर समावेश पर चर्चा की। कार्यक्रम में चन्दन की उन्नत खेती, पौधों की देखभाल, जलवायु की उपयुक्तता और मृदा की विशेषताओं पर विस्तृत चर्चा किया गया। मीडिया प्रभारी अंकुर श्रीवास्तव ने बताया कि केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्देश्य प्रदेश में चन्दन की खेती को बढ़ावा देने और किसानों को इससे जुड़ी आधुनिक जानकारी उपलब्ध कराने, कृषि आय बढ़ाने और पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान देना रहा। कार्यक्रम में सौ से अधिक किसानों ने भाग लिया, जिन्होंने चन्दन की व्यावसायिक खेती के अवसरों और तकनीकी पहलुओं पर जानकारी प्राप्त की।

बेदखली सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा पुत्र दीपक उम्र लगभग 24 वर्ष मेरे कहने सुनने में नहीं है। वह आये दिन हमारे साथ गाली गलौज करता है। उसकी इन बेजा हरकतों से आजिज आकर मैं अपने उक्त पुत्र को अपनी समस्त चल अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया हूं। उसके द्वारा किये गये किसी भी कृत्य का वह स्वयं जिम्मेदार होगा उससे मेरा व मेरे परिवार के अन्य सदस्यों से कोई भी वास्ता व सरोकार नहीं होगा।

अशोक कुमार
पुत्र मुन्शी लाल